अजित सिंगनर

सेर होंगथोम

अनुवाद : दिनकर कुमार

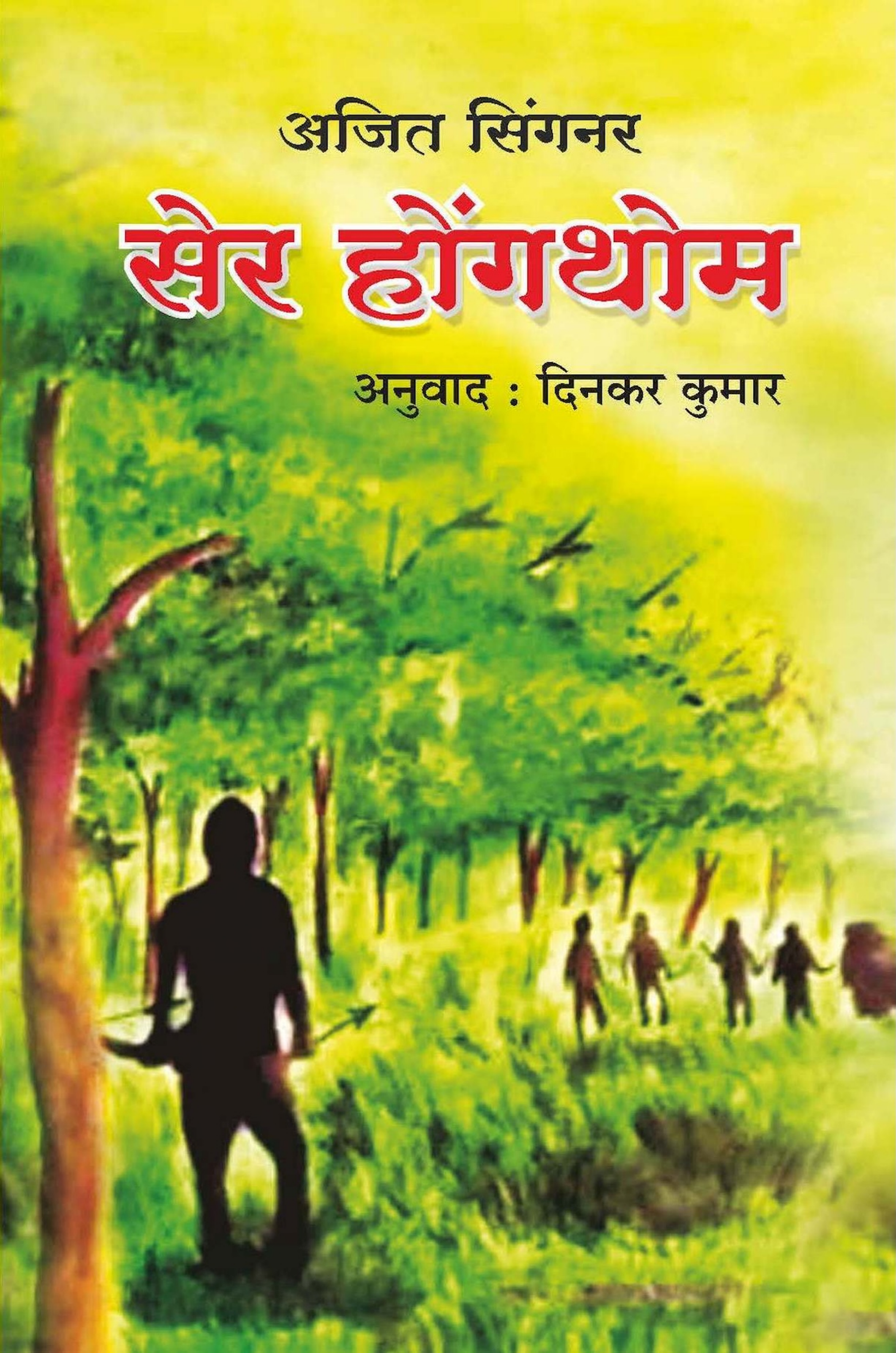

सेर होंगथोम

(असमिया ऐतिहासिक उपन्यास)

अजित सिंगनर

अनुवाद : **दिनकर कुमार**

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19019-51-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
राधेश्याम

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

SIR HONGTHOM
Assamese Historical Novel *originally written in Assamese by* ***Ajit Singnar***
Hindi translated by ***Dinkar Kumar***

अर्पण

मेरी पत्नी गीता हाँसेपी,
पुत्री शैलजा (नेना) और प्रांतिका (मुनू) के हाथों में
सप्रेम भेंट

प्रस्तावना

कार्बी जनजाति के लोगों के बीच प्रचलित कहानियों में वाईसंग तेरांग की कहानी प्रमुख है। एक नया कार्बी राज्य स्थापित करने में सक्षम होने वाले इस असाधारण व्यक्ति की बातें असल में ऐतिहासिक हैं। कार्बी लोगों के बीच इतिहास लिखने की परम्परा नहीं थी इसीलिए वाईसंग के जीवनकाल की घटनाओं के बारे में कहानियाँ प्रचलित हुईं। इतिहास में इस राजा के नाम का उल्लेख नहीं है लेकिन उनकी कहानी के साथ जिन राजाओं का सम्पर्क हुआ था उसकी तरफ गौर करने से साबित होता है कि यह सब इतिहास था। दूसरी तरफ, आहोम राजा के साथ वाईसंग का कोई टकराव नहीं हुआ था इसलिए असम के इतिहास में जगह नहीं मिली, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। इतिहास में उपेक्षित होने पर भी, वर्तमान में भी कार्बी लोग वाईसंग की कहानी को सत्य घटना मानते हैं। इसके अलावा वाईसंग का राज्य जयंतिया राज्य की सीमा से लेकर वर्तमान लामडिंग-डिफू-बोकाजान से होकर लुइत के किनारे तक, उसके बाद लुइत की तलहटी से होकर कलंगमुख तक और कलंग नदी की तलहटी से होकर किलिंग नदी के मुहाने तक माना जाता है। उनके राज्य की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर पुराना कार्बी राज्य था। उनके समय में ही सबसे पहले वर्तमान के पूर्व कार्बी आंगलोंग के कार्बी लोग पश्चिमी कार्बी आंगलोंग से आये थे ऐसा कहा जाता है। वाईसंग का सम्पर्क जिन राजाओं के साथ हुआ उनमें आहोम राजा रुद्र सिंह, जयंतिया राजा रामसिंह और कछारी राजा ताम्रध्वज प्रमुख थे। ये सभी राजा समसामयिक थे। वाईसंग की कहानी असल में इतिहास है इसलिए इन तीनों राजाओं का उल्लेख उनकी कहानी में किया गया है, क्योंकि इस तरह का संयोग काल्पनिक लोक कथा में मुमकिन नहीं हो सकता। वाईसंग की कहानी में हम देखते हैं–जयंतिया सैनिक सीमावर्ती अंचल में रहने वाले कार्बी लोगों पर किस प्रकार जुल्म करते थे, किस तरह उनको भागना पड़ता था और किस तरह नई जगह पर जाकर गाँव बसाना पड़ता था। बाद में वाईसंग ने ऐसे लोगों को ही साथ लेकर जयंतिया लोगों के खिलाफ युद्ध किया था और एक नया कार्बी राज्य स्थापित करने में सफल हुए थे। गौरतलब है कि आहोम ने जयंतिया राज्य पर हमला कर परोक्ष रूप से वाईसंग की राज्य स्थापना में मदद की थी।

वाईसंग की कहानी में उल्लेख मिलता है कि कार्बी सेना ने जयंतिया सेना को कई बार पराजित किया था। शक्तिशाली जयंतिया लोग अहोम के हमले से कमजोर हो गये थे इसलिए वाईसंग उनको युद्ध में हराने में सफल हुए थे, ऐसा सोचा जा सकता है। वाईसंग को मित्र राजा के तौर पर स्वीकार करते हुए जयंतिया राजा ने एक सोने की अँगूठी उपहार में देने के साथ ही कछारी राजा और आहोम राजा के साथ मित्रता करने की सलाह दी थी। उनकी सलाह के अनुसार वाईसंग ने कछारी राजा ताम्रध्वज और आहोम राजा रुद्र सिंह के साथ मित्रता की थी। रुद्र सिंह और ताम्रध्वज ने भी मित्रता की निशानी के तौर पर उनको सोने की अँगूठी उपहार में दी थी। तीन राजाओं से तीन सोने की अँगूठी उपहार के तौर पर मिलने के चलते वाईसंग को 'सेर होंगथोम' कहकर पुकारा गया, जिसका अर्थ होता है 'सोना के तीन टुकड़े' यानी 'तीन स्वर्ण' या 'त्रिस्वर्ण' ।